No of Questions : 30

No of Pages : 3

नामांक

माध्यमिक परीक्षा, 2019

सामाजिक विज्ञान

मॉडल पेपर 4

समय : $3\frac{1}{4}$ घण्टे **पूर्णांक : 80**

परीक्षार्थियों के लिए के लिये सामान्य निर्देश :–

1. परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्न–पत्र पर नामांक अनिवार्यतः लिखें।
2. सभी प्रश्न करने अनिवार्य हैं।
3. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दी गई उत्तर–पुस्तिका में ही लिखें।
4. जिन प्रश्नों में आन्तरिक खण्ड हैं, उन सभी के उत्तर एक साथ ही लिखें।
5.

प्रश्न संख्या	अंक प्रत्येक प्रश्न	उत्तर की शब्द सीमा
1–10	1	20 शब्द
11–19	2	40 शब्द
20–26	4	100 शब्द
27, 29	6	150 शब्द
28	7	150 शब्द

6. प्रश्न संख्या 30 मानचित्र कार्य से संबंधित है और 5 अंक का है।
7. प्रश्न संख्या 24 व 27 से 29 तक में आंतरिक विकल्प है।

---

1. मेगस्थनीज कौन था? 1

2. तुगलक वंश की स्थापना कब और किसने की? 1

3. लोकतन्त्र के परम्परागत उदारवादी सिद्धान्त के प्रमुख दो विचारकों के नाम बताइए। 1

4. जहाज निर्माण और मरम्मत की सुविधा किस बंदरगाह में उपलब्ध हैं? 1

5. सतत् विकास से क्या आशय हैं? 1

6. मानव विकास सूचकांक (एच.डी.आई) से क्या अभिप्राय है? 1

7. नियोजन के तीन प्रमुख घटक कौन–कौन से हैं? 1

8. किस संदर्भ में मिश्रित रिकॉल अवधियों का प्रयोग किया जाता है? 1

9. लागत प्रेरित मुद्रास्फीति किसे कहते है? 1

www.rbse.online

www.rajteachers.com

10. कुशल नियोजन की भारत में आवश्यकता क्यों है? 1

11. विधानपरिषद् की शक्तियाँ बताइए। 2

12. राजस्थान में जल संरक्षण तकनीक को क्यों अपनाया गया था? 2

13. ऋतुओं के आधार पर भारतीय कृषि को कितने भागों में बाँटा गया है? उदाहरण सहित बताइए। 2

14. किन–किन वस्तुओं का प्रयोग ताँबे के निर्माण में किया जाता है? 2

15. सीमेण्ट उद्योग का तेज गति से विस्तार हो रहा है। इसके लिए उत्तरदायी चार कारणों को लिखिए। 2

16. राजस्थान की जनसंख्या घनत्व का विश्लेषण जनगणना 2011 के आंकड़ों के अनुसार करें? 2

17. सड़क परिवहन से होने वाले लाभों को बताइए। 2

18. वाहन वायु प्रदूषण के लिए उत्तरदायी है? समीक्षा कीजिए। 2

19. पुनः चक्रण के तीन स्तर कौन–कौनसे हैं? लिखिए। 2

20. राष्ट्रकूट वंश का संक्षिप्त परिचय दीजिए। 4

21. विजयनगर साम्राज्य का परिचय दीजिए। 4

22. वस्त्र उद्योग में औद्योगिक क्रान्ति के समय क्या–क्या आविष्कार हुए। 4

23. लोकतंत्र के परम्परागत उदारवादी सिद्धान्त का वर्णन कीजिए। 4

24. कौशल विकास करना क्यों आवश्यक है? 4

अथवा

24. भारतीय अर्थव्यवस्था की विकासशीलता को दर्शाने वाली चार विशेषताएँ बताइए। 4

25. गैर संस्थागत वित्तीय स्रोतों के गुण–दोष लिखिए। 4

26. सूचना पाने का अधिकार अधिनियम क्या है? इसके कोई दो लाभ बताइए। 4

27. भारत के स्वतन्त्रता संघर्ष में क्रान्तिकारियों का क्या योगदान रहा? उल्लेख कीजिए। 7

अथवा

27. सविनय अवज्ञा आन्दोलन का वर्णन कीजिए। 7

28. राष्ट्रपति की आपातकालीन शक्तियों की विवेचना कीजिए। 6

अथवा

28. राज्यसभा का गठन तथा शक्तियों को लिखिए। 6

29. राज्यपाल की नियुक्ति, अधिकारों तथा कार्यों का वर्णन कीजिए। 7

www.rajteachers.com

अथवा

29. मुख्यमंत्री द्वारा किए जाने वाले कार्यों की विवेचना कीजिए। 7

30. 1. दिए गए भारत के रेखा मानचित्र में निम्न को अंकित कीजिए– 5

(a) सूरत

(b) गोवा

2. दिए गए भारत के रेखा मानचित्र में निम्न अंकित कीजिए–

(a) चावल उत्पादक प्रमुख क्षेत्र

(b) मुम्बई हाई

(c) भद्रावती लौहा और इस्पात संयंत्र

□□□□□□□

www.rbse.online
www.rajteachers.com

राजस्थान बोर्ड परीक्षा 2019
10वीं कक्षा
सामाजिक विज्ञान
मॉडल पेपर 4

समय : $3\frac{1}{4}$ घंटे **(पूर्णांक : 80)**

परीक्षार्थियों के लिये सामान्य निर्देश :-

1. परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्न-पत्र पर नामांक अनिवार्यतः लिखें।
2. सभी प्रश्न करने अनिवार्य हैं।
3. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दी गई उत्तर-पुस्तिका में ही लिखें।
4. जिन प्रश्नों में आन्तरिक खण्ड हैं, उन सभी के उत्तर एक साथ ही लिखें।
5.

प्रश्न संख्या	अंक प्रत्येक प्रश्न	उत्तर की शब्द सीमा
1-10	1	20 शब्द
11-19	2	40 शब्द
20-26	4	100 शब्द
27, 29	6	150 शब्द
28	7	150 शब्द

6. प्रश्न संख्या 30 मानचित्र कार्य से संबंधित है और 5 अंक का है।
7. प्रश्न संख्या 24 व 27 से 29 तक में आंतरिक विकल्प है।

---

1. मेगस्थनीज कौन था? 1

उत्तर :
मेगस्थनीज यूनान का एक राजदूत था जिसे यूनानी शासक सेल्यूकस निकेटर ने चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में भेजा था। इसने 'इण्डिका' नामक पुस्तक लिखी थी।

2. तुगलक वंश की स्थापना कब और किसने की? 1

उत्तर :
तुगलक वंश की स्थापना 1320 ई. में तुगलक वंश के प्रथम सुल्तान गयासुद्दीन तुगलक ने की।

3. लोकतन्त्र के परम्परागत उदारवादी सिद्धान्त के प्रमुख दो विचारकों के नाम बताइए। 1

उत्तर :
लोकतन्त्र के परम्परागत उदारवादी सिद्धांत के दो प्रमुख विचारक निम्न हैं-

1. बेन्थम
2. जे.एस.मिल

4. जहाज निर्माण और मरम्मत की सुविधा किस बंदरगाह में उपलब्ध हैं? 1

उत्तर :
जहाज निर्माण और मरम्मत की सुविधा 'विशाखापट्टनम' नामक बंदरगाह में उपलब्ध है।

5. सतत् विकास से क्या आशय हैं? 1

उत्तर :
प्राकृतिक संसाधनों की निरंतरता को बनाये रखते हुए जो आर्थिक विकास किया जाता है उसे सतत् विकास कहते हैं।

6. मानव विकास सूचकांक (एच.डी.आई) से क्या अभिप्राय है? 1

उत्तर :
मानव विकास सूचकांक (एच.डी.आई) जीवन प्रत्याशा, शिक्षा और प्रति व्यक्ति आय संकेतकों का एक समग्र आंकड़ा है।

7. नियोजन के तीन प्रमुख घटक कौन-कौन से हैं? 1

उत्तर :
नियोजन के तीन प्रमुख घटक निम्नलिखित हैं-

सभी विद्यार्थियों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर/डेस्क वर्क प्राप्त करने के लिए 9460377092 को अपनी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में एड करें। आपकी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में पेपर भेज दिए जाएंगे।
www.rajteachers.com

1. उपलब्ध संसाधनों का अनुमान
2. प्राथमिकता क्रम में निर्धारित लक्ष्य एवं उद्देश्य
3. संसाधनों का विभिन्न लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु अनुकूलतम आवंटन एवं उपयोग।

8. किस संदर्भ में मिश्रित रिकॉल अवधियों का प्रयोग किया जाता है? 1

उत्तर :
मिश्रित रिकॉल अवधियों के अन्तर्गत खाद्यान्न एवं गैर-खाद्यान्न वस्तुओं पर उपभोग व्यय के समंक एकत्रित करने के लिए दो अलग-अलग संदर्भ अवधियों (30 दिन एवं 365 दिन) का संयुक्त रूप से प्रयोग किया जाता है।

9. लागत प्रेरित मुद्रास्फीति किसे कहते है? 1

उत्तर :
लागतों में वृद्धि होने के कारण समग्र पूर्ति में गिरावट हो जाने से जो मुद्रास्फीति उत्पन्न होती है उसे लागत प्रेरित मुद्रास्फीति कहते हैं।

10. कुशल नियोजन की भारत में आवश्यकता क्यों है? 1

उत्तर :
भारत में प्रतिवर्ष लाखों युवा श्रम शक्ति में सम्मिलित होते हैं। उचित नीति बनाकर इन युवाओं के लिए रोजगार सृजन की जरूरत है। अतः भारत में कुशल नियोजन की आवश्यकता है।

11. विधानपरिषद् की शक्तियाँ बताइए। 2

उत्तर :
विधानपरिषद् की शक्तियाँ निम्नलिखित हैं-
1. विधानपरिषद् धन विधेयक को केवल 14 दिन तक रोक सकती हैं।
2. विधानपरिषद् किसी साधारण विधेयक को अधिकतम 4 माह तक ही रोक सकती है।
3. विधानपरिषद् प्रश्नों, प्रस्तावों तथा वाद-विवाद के आधार पर मंत्रिपरिषद् को नियंत्रित कर सकती है।
4. जिन संशोधन विधेयकों में राज्य विधानमण्डल का समर्थन आवश्यक है, उनमें विधानपरिषद् भी भाग लेती है।

12. राजस्थान में जल संरक्षण तकनीक को क्यों अपनाया गया था? 2

उत्तर :
राजस्थान में वर्षा की कमी तथा सूखे की आशंका हमेशा से बनी रहती हैं। वर्तमान में गिरते भूमिगत जलस्तर, स्थानीय स्तर पर प्रचलित जलस्रोतों की दुर्दशा, बड़े बाँधों में बढ़ती मिट्टी की गाद तथा वर्षा की कमी के कारण जलसंकट की विकट परिस्थितियाँ उत्पन्न होने लगी है। साथ ही बढ़ती जनसंख्या से जल की बढ़ती माँग के कारण संकट और भी गंभीर हो गया है इस कारण राजस्थान में जल संरक्षण तकनीक को अपनाया गया।

13. ऋतुओं के आधार पर भारतीय कृषि को कितने भागों में बाँटा गया है? उदाहरण सहित बताइए। 2

उत्तर :
ऋतुओं के आधार पर भारतीय कृषि को तीन भागों में बाँटा गया हैं-
1. **खरीफ फसल** - मक्का, चावल, बाजरा, मूँगफली आदि।
2. **रबी फसल** - गेहूँ, जौ, सरसों, चना आदि।
3. **जायद फसल** - हरी सब्जियाँ, चारा आदि।

14. किन-किन वस्तुओं का प्रयोग ताँबे के निर्माण में किया जाता है? 2

उत्तर :
ताँबा एक अत्यंत उपयोगी अलौह धातु है। विद्युत का उत्तम चालक होने के कारण ताँबे का प्रयोग मोटरों, ट्रांसफार्मरों तथा जेनरेटरों, विद्युत उपकरणों, टेलीफोन तथा टेलीग्राफ उपकरणों के निर्माण में किया जाता है। इसके बर्तन व सिक्के भी बनाए जाते हैं। आभूषणों को सुदृढ़ता प्रदान करने के लिए ताँबे को स्वर्ण के साथ भी मिलाया जाता है। ताँबा एक मिश्रधातु योग्य, आघातवर्ध्य तथा तन्य धातु है।

15. सीमेण्ट उद्योग का तेज गति से विस्तार हो रहा है। इसके लिए उत्तरदायी चार कारणों को लिखिए। 2

उत्तर :
सीमेण्ट उद्योग के तेज गति से विस्तार के लिए उत्तरदायी चार कारण निम्नलिखित है-
1. देश के आधारभूत ढाँचे जैसे- सड़कें, पुल, जलाशय तथा सिंचाई परियोजनाओं के निर्माण के लिए सीमेंट की आवश्यकता का बढ़ना।
2. भारत के सीमेंट की विदेशों में भी माँग है। विशेषकर यह दक्षिण और पूर्वी एशिया में निर्यात किया जाता है।
3. मूल्य में नियंत्रण समाप्ति।
4. वितरण में नियंत्रण समाप्ति।

16. राजस्थान की जनसंख्या घनत्व का विश्लेषण जनगणना 2011 के आंकड़ों के अनुसार करें? 2

उत्तर :
1. राजस्थान की जनगणना में वर्ष 2011 में जनसंख्या घनत्व 201 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी था, जो 2001 की जनगणना से 36 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी ज्यादा था, क्योंकि पहले ये 165 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी था।
2. राजस्थान राज्य में सबसे ज्यादा जनसंख्या घनत्व 598 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी (2011 जनगणना के अनुसार) जयपुर जिले में था और जैसलमेर जिले में सबसे कम जनसंख्या घनत्व 17 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी था।

17. सड़क परिवहन से होने वाले लाभों को बताइए। 2

उत्तर :
सड़क परिवहन देश के आर्थिक एवं सामाजिक विकास में अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है। इससे होने वाले लाभ निम्नलिखित है-
1. सड़क परिवहन छोटी दूरियों के लिए बहुत ही उपयुक्त है। इससे समय की बचत होती है।
2. यह हल्की, शीघ्र नष्ट होने वाली तथा टूटने वाली वस्तुओं के लिए उपयुक्त है।
3. इनके बनाने में तथा रख-रखाव में रेलों की अपेक्षा सुगमता है तथा खर्चा भी कम होता है।
4. इससे फार्म एवं खेतों को फैक्ट्रियों से जोड़ना संभव हो जाता है।

सभी गुरूजनों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर प्राप्त करने के लिए 9460377092 पर सिर्फ TEACHER शब्द व्हाट्सएप्प करें।
आपसे संपर्क कर आपको विशेष रूप से मॉडल पेपर भेजे जाएंगे।
www.rajteachers.com

5. इसकी सेवाएँ ग्राहक के दरवाजे तक उपलब्ध होती हैं।

18. वाहन वायु प्रदूषण के लिए उत्तरदायी है? समीक्षा कीजिए। 2

उत्तर :

बसों, कारों, ट्रकों, मोटरसाइकिलों, स्कूटर, डीजल रेलों आदि सभी में पेट्रोल अथवा डीजल तेल का ही प्रयोग किया जाता है। इन पेट्रोल अथवा डीजल चालित वाहनों द्वारा वायु प्रदूषण में निरंतर वृद्धि हो रही हैं। बड़े और घने शहरों में वाहन प्रदूषण के कारण वायु की गुणवत्ता इतनी कम हो गई है कि उससे स्वास्थ्य संबंधी बीमारियां पैदा हो रही हैं। इनसे भारी मात्रा में दम घोंटने वाला काला धुआँ निकलता है जो वायु को प्रदूषित करता है। इन सभी बातों से स्पष्ट है कि 'वाहन' वायु प्रदूषण के लिए उत्तरदायी है।

19. पुनः चक्रण के तीन स्तर कौन–कौनसे हैं? लिखिए। 2

उत्तर :

पुनः चक्रण के तीन स्तर निम्नलिखित हैं–

1. **प्रथम स्तर –** संग्रहित कचरे में से पुनः उपयोगी पदार्थों व धातुओं को छाँटकर अलग एकत्रित करना।
2. **द्वितीय स्तर –** एकत्रित पदार्थों या धातुओं से कच्चा माल तैयार करना।
3. **तृतीय स्तर –** प्राप्त कच्चे माल से नए उत्पाद बनाना।

20. राष्ट्रकूट वंश का संक्षिप्त परिचय दीजिए। 4

उत्तर :

1. राष्ट्रकूट साम्राज्य का संस्थापक दंतिदुर्ग था, जिसने चालुक्य वंश के राजा कीर्तिवर्मन को पराजित करके दक्कन के अधिकांश भाग को उससे छीन लिया।
2. दंतिदुर्ग की मृत्यु के बाद उसके चाचा कृष्णराज (ई. 750) मान्यखेत के राजसिंहासन पर आरूढ़ हुए।
3. कृष्णराज की ख्याति उसकी विजययात्राओं के कारण उतनी नहीं हैं, जितनी कि उस कैलाशमंदिर के निर्माण के कारण, जिसका निर्माण उसने एलोरा में पहाड़ को काटकर कराया था।
4. इस वंश के चौथे शासक ध्रुव की गुर्जरप्रतीहार राजा वत्सराज के साथ मुठभेड़ हुई। वत्सराज परास्त हो गया।
5. पाँचवे शासक गोविन्द तृतीय ने राष्ट्रकूटों के साम्राज्य को मालव प्रदेश से कांची तक विस्तृत कर दिया।
6. छठे शासक अमोघवर्ष ने 64 वर्षों तक शासन किया और अपने अधिकांश शासनकाल में वह आंतरिक संघर्षों में ही व्यस्त रहा। उसने मान्यखेत का भव्य विकास करके उसे अपनी राजधानी बनाया।
7. कृष्ण द्वितीय तथा इन्द्र तृतीय ने कन्नौज के तत्कालीन शासक महीपाल को पराजित कर भागने को मजबूर कर दिया।
8. बारहवें शासक कृष्ण तृतीय के बाद राष्ट्रकूट साम्राज्य का तेजी से पतन हो गया।
9. अन्तिम राष्ट्रकूट राजा खोट्टिग निष्यवर्ष को कल्याणी के चालुक्य नरेश तैलप द्वितीय ने पराजित करके अपदस्थ कर दिया। कर्क राष्ट्रकूट वंश का अंतिम राजा था और इसके साथ ही राष्ट्रकूट वंश का अन्त हो गया।

21. विजयनगर साम्राज्य का परिचय दीजिए। 4

उत्तर :

1. संगम के पांच पुत्रों ने जिसमें हरिहर तथा बुक्का सर्वाधिक प्रसिद्ध थे, तुंगभद्रा नदी के उत्तरी तट पर विजयनगर राज्य की नींव डाली।
2. विजयनगर की स्थापना 1336 ई. में हुई। हरिहर तथा बुक्का ने तुंगभद्रा नदी के किनारे विजयनगर नामक एक नगर बसाया था। यही नगर धीरे–धीरे एक विशाल हिंदू राज्य बन गया।
3. इस साम्राज्य पर तीन राजवंशों ने शासन किया–
   (a) संगम वंश
   (b) सुलुवा वंश
   (c) तुलुव वंश
4. हरिहर का राज्यारोहण 1336 ई. में हुआ। इसने होयसल के सारे प्रदेश को 1346 ई. में विजयनगर के अधिकार में ला दिया।
5. बुक्का 1346 ई. में अपने भाई हरिहर का उत्तराधिकारी बना। उसने 1377 ई. तक शासन किया। सारे दक्षिण भारत, रामेश्वरम्, तमिल व चेर प्रदेश तक बुक्का ने विजयनगर साम्राज्य को फैलाया।
6. हरिहर द्वितीय (1377–1406 ई.) बुक्का का उत्तराधिकारी था।
7. देवराय प्रथम (1406–1422 ई.) को हरिहर द्वितीय की तरह बहमनी सुल्तानों से पराजय मिली।
8. 1422 ई. से 1426 ई. तक बुक्का के पुत्र देवराय द्वितीय ने शासन किया। इसे गजबेटकर (हाथियों का शिकारी) की उपाधि मिली।
9. इस साम्राज्य के अन्तिम शासक क्रमशः मल्लिकार्जुन एवं विरूपाक्ष थे।

22. वस्त्र उद्योग में औद्योगिक क्रान्ति के समय क्या–क्या आविष्कार हुए। 4

उत्तर :

औद्योगिक क्रान्ति के समय वस्त्र उद्योग में निम्नलिखित आविष्कार हुए–

1. 1733 ई. में लंकाशायर जॉनके ने फ्लाइंग शटल का आविष्कार किया। यह रस्सियों और पुलियों के जरिए चलने वाला एक यांत्रिक औजार था जिसका बुनाई के लिए इस्तेमाल किया जाता था। फ्लाइंग शटल के आविष्कार से बुनकरों को बड़े करघे चलाना और चौड़े अरज का कपड़ा बनाने में काफी मदद मिली।
2. जेम्स हरग्रीव्ज द्वारा 1765 में स्पिनिंग जेनी मशीन बनाई गई। इस मशीन ने कताई की प्रक्रिया तेज कर दी और मजदूरों की माँग घटा दी। एक ही पहिया घुमाने वाला एक मजदूर बहुत सारी तकलियों को घुमा देता था और एक साथ कई धागे बनने लगते थे।
3. रिचर्ड आर्कराइट ने 1769 ई. में एक नई मशीन का आविष्कार किया। इसमें बेलन लगे रहते थे और उससे पक्का सूत काता जाता था। जिसकी सहायता से पहले की अपेक्षा अधिक मजबूत धागा बनाया जाने लगा। इस मशीन को पानी की शक्ति से चलाया जा सकता था। इसलिए इस यन्त्र को 'वाटर फ्रेम' का नाम दिया गया।
4. 1779 में क्रॉम्पटन ने म्यूल नामक मशीन बनाई जिससे बारीक सूत अधिक मात्रा में निकलने लगे।
5. बुनाई में उन्नति करने के लिए एडमंड कार्टराइट ने 1785 ई. में

सभी विद्यार्थियों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर/डेस्क वर्क प्राप्त करने के लिए 9460377092 को अपनी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में एड करें। आपकी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में पेपर भेज दिए जाएंगे।
www.rajteachers.com

वाष्प से चलने वाला एक करघा तैयार किया जो पावरलूम के नाम से मशहूर है।

23. लोकतंत्र के परम्परागत उदारवादी सिद्धान्त का वर्णन कीजिए। 4

उत्तर :

लोकतंत्र के उदारवादी सिद्धान्त का विकास पश्चिमी देशों में हुआ। इस सिद्धान्त के प्रमुख विचारक हॉब्स, लॉक, रूसो, बेनथम, जे.एस.मिल, टी.एच.ग्रीन, मॉण्टेस्क्यू, अब्राहम लिंकन, जैफरसन एवं हरबर्ट स्पेन्सर आदि थे। इन सभी विद्वानों ने व्यक्ति के सुख, स्वतंत्रता एवं अधिकार आदि के सन्दर्भ में अपने लोकतंत्र संबंधी विचार प्रस्तुत किए। लोकतंत्र के परम्परागत उदारवादी सिद्धान्त की आधारभूत मान्यताएँ एवं लक्षण निम्नलिखित हैं–

1. मनुष्य एक बुद्धिमान प्राणी है। यह अपना हित व अहित समझने की क्षमता रखता है।
2. शासन का गठन उदारवादी एवं लोकतांत्रिक संविधानवाद के अनुसार होना चाहिए।
3. सभी व्यक्ति बराबर (समान) है।
4. सरकार की शक्ति का आधार 'जनता की इच्छा' होती है। अतः सरकार राजनीतिक सत्ता की मात्र न्यासी होती है।
5. निश्चित अवधि के बाद स्वतंत्र एवं निष्पक्ष चुनाव होने चाहिए एवं एक से अधिक राजनीतिक दल होने चाहिए।
6. शासन के संचालन के कुछ आधारभूत नियम है–
   (a) शासन का संचालन जनता द्वारा, जनता के प्रतिनिधियों द्वारा किया जाना चाहिए।
   (b) शासन के गठन एवं संचालन में बहुमत के सिद्धान्त का पालन किया जाना चाहिए।
   (c) शासन को जनता के प्रति उत्तरदायी होना चाहिए तथा शासन का उद्देश्य व्यक्ति का हित होना चाहिए।
7. व्यक्ति को नागरिक स्वतंत्रताएँ और अधिकार प्राप्त होने चाहिए एवं इनकी रक्षा के लिए स्वतंत्र एवं निष्पक्ष न्यायपालिका की स्थापना होनी चाहिए।
8. सरकार को जनमत का आदर करना चाहिए।

24. कौशल विकास करना क्यों आवश्यक है? 4

उत्तर :

कौशल विकास की आवश्यकता को निम्नलिखित बिन्दुओं द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है–

1. कौशल विकास के द्वारा श्रम शक्ति को अधिक उत्पादक बनाया जा सकता है।
2. कौशल विकास से व्यक्ति की योग्यता, उत्पादकता एवं जीवन की गुणवत्ता में वृद्धि होती है तथा वह राष्ट्र की आर्थिक वृद्धि में अधिक योगदान दे पाता है।
3. राष्ट्र की सफलता सदैव वहाँ की मानव शक्ति की सफलता पर निर्भर करती है। कौशल विकास से भारत की मानव शक्ति को अनेक लाभ तथा अवसर प्राप्त होंगे। इससे भारत का प्रत्येक नागरिक सम्पन्नता तथा सम्मान युक्त जीवन जीने में सक्षम होगा।

अथवा

24. भारतीय अर्थव्यवस्था की विकासशीलता को दर्शाने वाली चार विशेषताएँ बताइए। 4

उत्तर :

भारतीय अर्थव्यवस्था की विकासशीलता को दर्शाने वाली विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

1. **राष्ट्रीय आय तथा प्रति व्यक्ति आय में सतत् एवं तीव्र वृद्धि –** भारत की राष्ट्रीय आय तथा प्रति व्यक्ति आय में होने वाली सतत् एवं तीव्र वृद्धि भारतीय अर्थव्यवस्था के विकासशील स्वरूप को दर्शाती है।
2. **अर्थव्यवस्था की संरचना में परिवर्तन –** भारत की राष्ट्रीय आय में प्राथमिक क्षेत्र का अंश लगातार कम हो रहा है तथा द्वितीयक एवं तृतीयक क्षेत्र का अंश निरंतर बढ़ रहा है। द्वितीयक क्षेत्र की अपेक्षा तृतीयक क्षेत्र अधिक तेजी से बढ़ा है। अर्थव्यवस्था की संरचना का यह परिवर्तन इसके विकासशील स्वरूप को व्यक्त करता है।
3. **विशाल तथा तेजी से बढ़ता सेवा क्षेत्र –** लगातार तेज वृद्धि दर के कारण भारत में सेवा–क्षेत्र अर्थव्यवस्था का सबसे बड़ा क्षेत्र बन गया है। वर्तमान में अकेला सेवा–क्षेत्र राष्ट्रीय आय का लगभग 60 प्रतिशत भाग उत्पादित कर रहा है। व्यापक तथा लगातार बढ़ता हुआ सेवा क्षेत्र भारतीय अर्थव्यवस्था की विकासशीलता का एक महत्त्वपूर्ण संकेतक है।
4. **आर्थिक एवं सामाजिक आधार संरचना में सुधार –** भारत में आर्थिक एवं सामाजिक आधार संरचना में तेजी से सुधार हो रहा है। यहाँ साक्षरता दर 1951 में 18.3 प्रतिशत थी जो 2011 में बढ़कर 74.04 प्रतिशत हो गयी। इसी प्रकार जन्म के समय जीवन प्रत्याशा 1951 में 32.1 वर्ष थी, जो 2014 में 68 वर्ष हो गयी। आर्थिक एवं सामाजिक आधार संरचना में ये सुधार विकास के आधारस्तम्भ है। शिक्षा एवं स्वास्थ्य सेवाओं के विस्तार के आधार पर हम कह सकते हैं कि भारतीय अर्थव्यवस्था विकास कर रही है।

25. गैर संस्थागत वित्तीय स्रोतों के गुण–दोष लिखिए। 4

उत्तर :

गैर संस्थागत वित्तीय स्रोत में वे वित्तीय संस्थाएं सम्मिलित होती हैं जो वित्त के लेन–देन के संबंध में सरकार तथा भारतीय रिजर्व बैंक के पास पंजीकृत नहीं होती तथा इनके द्वारा दिए गए दिशा निर्देशों का पालन नहीं करती हैं। ये संस्थाएं मौद्रिक प्राधिकरण के नियमन तथा नियंत्रण से बाहर होती हैं।

गैर संस्थागत वित्तीय स्रोतों के गुण–

1. गैर–संस्थागत वित्तीय स्रोतों द्वारा साख प्रदान करके की प्रक्रिया बहुत सीधी तथा सरल होती है।
2. इन संस्थाओं की गतिविधियाँ समय बाधित नहीं होती है।
3. ये संस्थाएँ बहुत लोचशील होती है।
4. इन संस्थाओं द्वारा बहुत कम कागजी कार्यवाही की जाती है।

गैर संस्थागत वित्तीय स्रोतों के दोष–

1. गैर–वित्तीय संस्थाएँ मुद्रा को वसूल करने के लिए अनेक बार अनुचित साधनों का भी प्रयोग करती है।
2. इन संस्थाओं द्वारा लेन–देन का बहुत कम रिकॉर्ड रखा जाता है। इन पर लेनदेन के रिकॉर्ड में हेरा–फेरी के गम्भीर आरोप भी लगते रहते हैं।
3. गैर–वित्तीय संस्थाओं द्वारा ऋणियों से ली जाने वाली ब्याज की

सभी गुरूजनों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर प्राप्त करने के लिए 9460377092 पर सिर्फ TEACHER शब्द व्हाट्सएप्प करें।
आपसे संपर्क कर आपको विशेष रूप से मॉडल पेपर भेजे जाएंगे।
www.rajteachers.com

दर बहुत ऊँची होती हैं।

26. सूचना पाने का अधिकार अधिनियम क्या है? इसके कोई दो लाभ बताइए। 4

उत्तर :

सूचना पाने का अधिकार एक विशेष तरह का कानून है, जिसका आविर्भाव वर्ष 2005 में हुआ था। इस कानून को लाने का सबसे बड़ा उद्देश्य आम लोगों को सरकार से सवाल करने का हक देना था। इस कानून की सहायता से कोई भी आम व्यक्ति किसी भी सरकारी कार्यालय में अपना आरटीआई दर्ज करा कर किसी भी तरह की जानकारी प्राप्त कर सकता है। सरकार से सवाल पूछने का हक देश के हर नागरिक को है।

सूचना के अधिकार से लाभ–

1. इस कानून का सदुपयोग करके सरकारी संस्थानों से कई तरह के तथ्य संबंधित जानकारियाँ प्राप्त की जा सकती है। इसके अलावा कोई व्यक्ति इस कानून के अधीन राय नहीं मांग सकता है।
2. इस कानून का प्रयोग करके लोग 'भ्रष्टाचार की शिकायत', बिजली, पानी संबंधी समस्या, सड़कों की मरम्मत के फंड संबंधित जानकारियाँ प्राप्त कर सकते हैं।

27. भारत के स्वतन्त्रता संघर्ष में क्रान्तिकारियों का क्या योगदान रहा? उल्लेख कीजिए। 7

उत्तर :

भारत के स्वतन्त्रता संघर्ष में क्रान्तिकारियों का योगदान–

1. **महाराष्ट्र में क्रान्तिकारी आन्दोलन –** क्रांतिकारी वासुदेव बलवंत फड़के महाराष्ट्र के थे। उन्होंने रामोशी, नाइक, धनगर और भील जातियों को संगठित करके उनकी एक सुसज्जित सेना बना डाली। अंग्रेजी सेना के विरुद्ध उन्होंने कई सफल लड़ाइयाँ लड़ीं। ब्रिटिश शासन के लिए वह आतंक बन गया था। किसी देशद्रोही ने उसे सोते हुए गिरफ्तार करा दिया। उसे आजीवन कारावास का दंड देकर अदन की जेल में बंद कर दिया गया। वहीं उसका प्राणांत हुआ। वासुदेव बलवंत फड़के के साथ ही छापामार युद्धों का युग समाप्त हो गया।
2. **चापेकर बन्धुओं द्वारा रैंड की हत्या –** महाराष्ट्र के पूना नगर में दामोदर हरि चापेकर, बालकृष्ण हरि चापेकर और वासुदेव हरि चापेकर नाम के तीन सगे भाइयों ने एक संघ की स्थापना की और युवकों को अर्द्ध–सैनिक प्रशिक्षण देकर ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध तैयार किया। इन लोगों को लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक का संरक्षण प्राप्त था। 22 जून 1897 को उन्होंने पूना के अत्याचारी प्लेग कमिश्नर मि. रैंड और एक पुलिस अधिकारी मि. आयरिस्ट को गोलियों से भून डाला। इस कांड में दोनों चापेकर बंधुओं को फाँसी का दंड मिला। सबसे छोटे भाई वासुदेव हरि चापेकर को भी मुखबिर की हत्या के अपराध में फाँसी का दंड मिला।
3. **श्यामजी कृष्ण वर्मा –** श्यामजी कृष्ण वर्मा ने क्रांतिकारी गतिविधियों के लिए लंदन का चयन किया। 1905 ई. में उन्होंने भारत स्वशासन समिति का गठन किया और 'इण्डियन सोशियोलोजिस्ट' नामक मासिक पत्र का प्रकाशन किया, शीघ्र ही लन्दन में भारत स्वशासन समिति, जिसे 'इण्डिया हाउस' भी कहा जाता था, क्रान्तिकारी गतिविधियों का प्रमुख केन्द्र बन गया।
4. **विनायक दामोदर सावरकर –** नासिक जिले के कलेक्टर जैक्सन ने विनायक सावरकर हत्या प्रकरण में 7 अप्रैल, 1911 को वीर सावरकर को सजा सुनाई और जेल भेज दिया। वहाँ सावरकर को सश्रम कारावास हुआ। आसपास के क्षेत्र दलदली थे। पहाड़ों पर पेड़ों को काटकर जंगल साफ कराये गये। इनको यहाँ पर कठोर यातनाएँ दी गई। इनके पास इन अत्याचारों के विरुद्ध गाँधी जी का दिया हुआ एक ही अमोघ शस्त्र था और वह था भूख हड़ताल। सेल्यूलर जेल में सामूहिक भूख हड़ताल हुई, इसमें वीर सावरकर ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।
5. **बंगाल में क्रान्तिकारी आन्दोलन –** बंगाल में क्रांतिकारियों का प्रमुख संगठन 'अनुशीलन समिति' था, जिसकी स्थापना सतीशचन्द्र बसु व उसके साथियों ने 24 मार्च, 1903 ई. को की थी, किन्तु बंगाल में क्रान्तिकारी संगठन बनाने का कार्य अरविन्द घोष के आग्रह पर जतीन्द्र नाथ बंद्योपाध्याय व पी. मित्र ने किया। 30 अप्रैल, 1908 को खुदीराम बोस तथा प्रफुल्ल चाकी ने मुजफ्फरपुर जाकर बंगाल के ले. गवर्नर किंग्सफोर्ड की गाड़ी पर बम फेंका, किन्तु दुर्भाग्यवश वह गाड़ी किंग्सफोर्ड की न होकर किन्हीं कनैडी दम्पति की निकली जिसमें उन दोनों की मृत्यु हो गयी। किंग्सफोर्ड बच निकला। खुदीराम बोस को 1 मई को गिरफ्तार कर लिया गया तथा 11 मई को उन्हें फांसी दे दी गयी। प्रफुल्ल चाकी ने गिरफ्तारी से बचने के लिए स्वयं ही गोली मारकर आत्महत्या कर ली।

   क्रान्तिकारी गतिविधियां पंजाब, महाराष्ट्र व बंगाल तक ही सीमित नहीं रहीं वरन् संयुक्त प्रान्त, बिहार, उड़ीसा, मध्य प्रदेश, राजस्थान, मद्रास, अहमदाबाद, दिल्ली में भी क्रान्तिकारियों ने विशेष रूप से कार्य किए।

अथवा

27. सविनय अवज्ञा आन्दोलन का वर्णन कीजिए। 7

उत्तर :

सविनय अवज्ञा आन्दोलन का विवेचन निम्नलिखित बिन्दुओं के अन्तर्गत किया गया है–

1. **सविनय अवज्ञा आन्दोलन का प्रारम्भ –** पूर्ण स्वाधीनता की माँग को प्राप्त करने के लिए गाँधीजी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन चलाने का फैसला किया। इस आंदोलन की शुरुआत गाँधीजी ने नमक सत्याग्रह के साथ की। दांडी में समुद्र तट पर पहुँचकर नमक बनाकर उन्होंने नमक कानून का उल्लंघन किया। संपूर्ण देश में नमक कानून को तोड़ने का काम किया गया। इस ऐतिहासिक घटना के साथ ही सविनय अवज्ञा आंदोलन की शुरुआत हुई।
2. **सविनय अवज्ञा आन्दोलन का कार्यक्रम –** गाँधीजी ने 9 अप्रैल को इस आंदोलन के कार्यक्रम की घोषणा की जिसमें प्रमुख बातें निम्नलिखित थी–
   (a) गाँव–गाँव में नमक कानून तोड़ा जाए।
   (b) छात्र सरकारी विद्यालयों व कर्मचारी दफ्तरों को छोड़ दें।
   (c) विदेशी वस्त्रों को जलाया जाए।
   (d) सरकार को कर न दिया जाए।
   (e) नारियां शराब, अफीम व विदेशी वस्त्रों की दुकानों का घिराव करें।
   (f) चरखा कातना।

सभी विद्यार्थियों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर/डेस्क वर्क प्राप्त करने के लिए 9460377092 को अपनी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में एड करें। आपकी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में पेपर भेज दिए जाएंगे।
www.rajteachers.com

(g) छूआछूत से दूर रहना।

3. **आन्दोलन का प्रसार –** सभी को विश्वास था कि नमक कानून का उल्लंघन करने के आरोप में गांधीजी को गिरफ्तार कर लिया जाएगा, किन्तु तत्कालीन स्थिति को देखकर सरकार को ऐसा साहस न हुआ। शीघ्र ही यह आंदोलन सम्पूर्ण भारत में फैल गया। सविनय अवज्ञा आंदोलन की लपटें पश्चिमोत्तर सीमा प्रान्त तक भी पहुँची।

 आंदोलन की तीव्रता को देखकर सरकार ने अपना दमन चक्र प्रारम्भ किया। गांधीजी ने स्थिति से निपटने के लिए घोषणा की कि वे धरासना के नमक कारखाने पर अधिकार करेंगे, किन्तु 5 मई को उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। गांधीजी की गिरफ्तारी से देश में तीव्र प्रतिक्रिया हुई। जगह–जगह पर प्रदर्शन व हड़तालें हुई। अंग्रेजों ने भारतीयों को लाठियों व बन्दूकों की बटों से मारा, पर भारतीय न तो पीछे हटे और न ही गिड़गिड़ाए।

 इरविन के प्रयत्नों से 12 नवम्बर, 1930 ई. को लन्दन में प्रथम गोलमेज सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसका उद्देश्य भारतीय समस्या का समाधान खोजना था। गांधीजी व इरविन के मध्य हुए इस समझौते के द्वारा सरकार ने स्वीकार किया कि वह सभी अध्यादेशों व मुकदमों को वापस ले लेगी तथा अहिंसात्मक आन्दोलन करने वाले सभी कैदियों को रिहा कर देगी।

 7 सितम्बर, 1931 ई. को द्वितीय गोलमेज सम्मेलन प्रारम्भ हुआ। ब्रिटिश सरकार ने घोषणा कर दी कि भारतीय प्रतिनिधि आपस में समझौता करने में असमर्थ रहे हैं, अतः सरकार ही कानून बनाकर इस समस्या का समाधान करेगी। खबर सुनकर गांधीजी दिसम्बर, 1931 ई. में भारत वापस आ गए। भारत आगमन पर गांधीजी का भव्य स्वागत किया गया, यद्यपि गांधीजी खाली हाथ ही लौटे थे। इसके बाद तृतीय गोलमेज सम्मेलन 17 नवम्बर, 1932 ई. से 24 दिसम्बर, 1932 ई. तक चला।

4. **सविनय अवज्ञा आंदोलन की समाप्ति–** 8 मई, 1933 ई. को गांधीजी ने हरिजनोद्धार के कार्य के संचालन के लिए आत्म शुद्धि हेतु 21 दिन का व्यक्तिगत उपवास रखने की घोषणा की। इस उपवास का सामाजिक उद्देश्य होने के कारण सरकार ने गांधीजी को रिहा कर दिया। इस समय गांधीजी ने 6 सप्ताह के लिए अवज्ञा आंदोलन स्थगित करने का परामर्श दिया व 12 जुलाई के कांग्रेस के पूना में हुए अनौपचारिक सम्मेलन द्वारा आंदोलन को स्थगित कर दिया गया।

28. राष्ट्रपति की आपातकालीन शक्तियों की विवेचना कीजिए। 6

उत्तर :

संकट की स्थिति का सामना करने के लिए संविधान द्वारा राष्ट्रपति को कुछ असाधारण शक्तियाँ प्रदान की गई हैं। संविधान में वर्णित संकटकालीन प्रावधान पिछले वर्षों में बहुत अधिक संशोधित होते रहे हैं। भारत के संविधान में अनुच्छेद 352 से लेकर 360 तक राष्ट्रपति की आपातकालीन शक्तियों का वर्णन किया गया है।

आपातकालीन शक्तियाँ– भारत के राष्ट्रपति को तीन प्रकार की आपातकालीन शक्तियाँ प्राप्त हैं–

1. **राष्ट्रीय आपातकाल –** अनुच्छेद 352 के अनुसार राष्ट्रपति युद्ध, बाह्य आक्रमण या सशस्त्र विद्रोह से भारत या उसके किसी भाग की सुरक्षा संकट में होने के आधार पर **आपात की उद्घोषणा** कर सकता है। इस घोषणा की अवधि 1 माह होती है। संसद के दोनों सदनों द्वारा अनुमोदित किए जाने से घोषणा 6 माह तक चल सकती है। इस प्रकार का पहला आपातकाल 1962 के चीन आक्रमण, दूसरा 1971 के पाकिस्तानी आक्रमण तथा तीसरा 1975 के पाकिस्तानी आक्रमण के समय घोषित किया गया था।

2. **राज्य में आपातकाल –** अनुच्छेद–356 के अन्तर्गत राष्ट्रपति सम्बन्धित राज्य में आपातकाल की घोषणा कर सकता है। इस उद्घोषणा का अनुमोदन संसद द्वारा दो महीने के भीतर आवश्यक हो जाता है। संसद की स्वीकृति के पश्चात् राष्ट्रपति शासन 6 माह तक प्रभावी रह सकता है। 44 वें संशोधन अधिनियम के पूर्व राष्ट्रपति शासन की अवधि 6–6 महीने करके तीन वर्ष तक प्रभावी रखी जा सकती थी, किन्तु इस अधिनियम द्वारा तीन वर्ष की अवधि को घटाकर एक वर्ष कर दिया गया।

 राष्ट्रपति द्वारा सर्वप्रथम इस शक्ति का प्रयोग 1951 में पंजाब के सन्दर्भ में किया गया था।

3. **वित्तीय आपातकाल –** देश में वित्तीय संकट होने पर राष्ट्रपति अनुच्छेद 360 के अन्तर्गत वित्तीय आपातकाल की घोषणा कर सकता है। वैसे देश में अभी तक एक भी बार वित्तीय आपातकाल नहीं लगाया गया है

अथवा

28. राज्यसभा का गठन तथा शक्तियों को लिखिए। 6

उत्तर :

राज्यसभा का गठन/रचना– अनुच्छेद 80 में राज्यसभा के गठन एवं निर्वाचन सम्बन्धी प्रावधान किए गए हैं। अनुच्छेद 80(1)(अ) तथा अनुच्छेद 80(3) के तहत राष्ट्रपति द्वारा 12 सदस्यों के नाम निर्देशित होंगे, जो साहित्य, कला, विज्ञान एवं समाज सेवा से जुड़े होंगे। अनुच्छेद 80(1)(इ) के अन्तर्गत प्रावधान है कि राज्यसभा के लिए अधिकतम 238 सदस्य राज्य व केन्द्रशासित प्रदेशों से होंगे, जो अप्रत्यक्ष निर्वाचन पद्धति से चुने जाएँगे। इस प्रकार राज्यसभा की अधिकतम संख्या 250(238+12) है, परन्तु वर्तमान में राज्यसभा की सदस्य संख्या 245 है, जिसमें 229 सदस्य राज्यों से, 4 संघ राज्य क्षेत्रों से तथा 12 मनोनीत सदस्य हैं। भारत में राज्यसभा के सदस्यों का चुनाव सीधे मतदाताओं द्वारा नहीं होता है, अपितु अनुच्छेद 80(4) के अनुसार राज्य विधानमण्डल (विधानसभा) के निर्वाचित सदस्यों द्वारा आनुपातिक प्रतिनिधित्व पद्धति के अनुसार एकल संक्रमणीय मत द्वारा अप्रत्यक्ष निर्वाचन प्रणाली द्वारा होता है, जिससे अल्पसंख्यक समुदायों और दलों का प्रतिनिधित्व हो सके।

राज्यसभा के कार्य और शक्तियाँ– राज्यसभा के कार्य और शक्तियों को निम्नलिखित रूप से स्पष्ट किया जा सकता है–

1. **विधायी शक्तियाँ –** राज्यसभा और लोकसभा सहयोगी कानून निर्मात्री सदन है। वित्त विधेयक को छोड़कर अन्य सभी विधेयकों के सम्बन्ध में दोनों सदनों को समान अधिकार प्राप्त है। साधारण विधेयक लोकसभा के समान राज्यसभा में भी प्रस्तावित हो सकता है। कोई भी विधेयक एक सदन द्वारा स्वीकृत होने के बाद दूसरे सदन में विचारार्थ भेजा जाता है। दोनों सदनों द्वारा पारित होने के बाद उस पर राष्ट्रपति की स्वीकृति ली जाती है।

2. **वित्तीय शक्तियाँ –** वित्तीय मामलों में राज्यसभा की स्थिति कमजोर है। वित्त विधेयक राज्यसभा में पुनः स्थापित नहीं किए

सभी गुरूजनों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर प्राप्त करने के लिए 9460377092 पर सिर्फ TEACHER शब्द व्हाट्सएप्प करें। आपसे संपर्क कर आपको विशेष रूप से मॉडल पेपर भेजे जाएंगे।
www.rajteachers.com

जा सकते हैं। लोकसभा द्वारा पारित होने के बाद वित्त विधेयक राज्यसभा में भेजा जाता है, जिसे राज्यसभा को 14 दिनों के अन्दर सुझावों के साथ लौटाना पड़ता है। उसके सुझावों को मानना या न मानना लोकसभा पर निर्भर करता है।

3. **कार्यपालिका पर नियन्त्रण की शक्ति –** संविधान में मंत्रिपरिषद् को लोकसभा के प्रति उत्तरदायी ठहराया गया है। राज्यसभा का मंत्रिपरिषद् पर कोई नियन्त्रण नहीं है, किन्तु वह उसे प्रभावित अवश्य करती है। राज्यसभा के सदस्य सरकार की आलोचना कर उसे सजग कर सकते हैं। प्रश्न तथा पूरक प्रश्न द्वारा कार्यपालिका से कोई भी सूचना माँगी जा सकती है। अनिवार्य प्रशासनिक विषयों पर वाद-विवाद करने के लिए 'काम रोको प्रस्ताव' लाया जा सकता है।
4. **संविधान संशोधन के संबंध में शक्ति –** राज्यसभा संविधान के संशोधन में भाग लेती है। संशोधन के लिए यह आवश्यक है कि संसद के प्रत्येक सदन की सम्पूर्ण सदस्य संख्या के बहुमत से तथा उपस्थित और मतदान करने वाले सदस्यों के दो-तिहाई बहुमत से पारित हो अन्यथा संशोधन प्रस्ताव गिर जाएगा।
5. **निर्वाचन संबंधी शक्तियाँ –** राज्यसभा के सदस्य राष्ट्रपति तथा उपराष्ट्रपति के निर्वाचन में भाग लेते हैं। राज्यसभा अपने उपसभापति का भी निर्वाचन करती है।
6. **विविध शक्तियाँ –** राज्यसभा को कुछ अन्य शक्तियाँ भी प्राप्त है जिनका प्रयोग वह लोकसभा के साथ मिलकर करती है। राज्यसभा लोकसभा के साथ मिलकर राष्ट्रपति, सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीशों एवं कुछ पदाधिकारियों पर महाभियोग लगा सकती है। साथ ही राज्यसभा लोकसभा के साथ मिलकर बहुमत से प्रस्ताव पारित कर उपराष्ट्रपति को उसके पद से हटा सकती है।
7. **विशेष अधिकार –** राज्यसभा को दो ऐसे अन्य अधिकार भी प्राप्त हैं जो लोकसभा के पास नहीं है एवं जिनका प्रयोग अकेले राज्यसभा ही करती है–
   (a) अनुच्छेद 312 के अनुसार अखिल भारतीय सेवाओं का सृजन राज्यसभा में उपस्थित एवं मत देने वाले सदस्यों के कम-से-कम 2/3 बहुमत द्वारा राष्ट्रीय हित में करना समाचीन है।
   (b) अनुच्छेद 249 के अनुसार राज्यसूची के विषय को राष्ट्रीय महत्त्व का घोषित करना- राज्यसभा 2/3 बहुमत द्वारा राज्यसूची के किसी विषय को राष्ट्रीय महत्त्व का घोषित कर सकती है। तत्पश्चात् संसद एक वर्ष तक इस सूची पर कानून बना सकती है।

29. राज्यपाल की नियुक्ति, अधिकारों तथा कार्यों का वर्णन कीजिए। 7

उत्तर :

राज्य का सर्वोच्च अधिकारी राज्यपाल होता है। संविधान द्वारा राज्य की कार्यपालिका की सारी शक्तियाँ राज्यपाल में निहित हैं लेकिन केन्द्र की तरह राज्य की मंत्रिपरिषद राज्यपाल के अधिकारों का उपयोग करते हुए राज्य के सारे कार्य उसकी ओर से सम्पन्न करती हैं।

राज्यपाल की नियुक्ति– राज्यपाल की नियुक्ति राष्ट्रपति के द्वारा की जाती है। वह उसी समय तक अपने पद पर कार्य कर सकता है जब तक उसे राष्ट्रपति का विश्वास प्राप्त रहता है। संविधान द्वारा स्थापित संसदीय व्यवस्था में राज्यपाल केवल संवैधानिक प्रधान है। अतः राज्यपाल पद के संबंध में निर्वाचन के स्थान पर मनोनयन की पद्धति को अपनाया गया है।

राज्यपाल के अधिकार और कार्य– राज्यपाल के अधिकारों तथा कार्यों को निम्नलिखित भागों में विभाजित किया जा सकता है–

1. **कार्यपालिका संबंधी अधिकार –** संविधान के अनुसार, राज्यपाल को कार्यपालिका संबंधी अनेक अधिकार प्रदान किए गए हैं जिनका प्रयोग वह मुख्यमंत्री के परामर्श से करता है। ये अधिकार निम्नलिखित हैं–
   (a) **संवैधानिक प्रधान के रूप में अधिकार –** राज्यपाल राज्य की कार्यपालिका का संवैधानिक अध्यक्ष है अतः राज्य प्रशासन के सारे कार्य उसी के नाम से किए जाते हैं।
   (b) **मंत्रियों की नियुक्ति –** राज्यपाल विधानसभा में बहुमत दल के नेता को मुख्यमंत्री के रूप में नियुक्त करता है और मुख्यमंत्री के परामर्श से अन्य मंत्रियों की नियुक्ति करता है। इसके अतिरिक्त राज्यपाल राज्य के महाधिवक्ता तथा राज्य लोकसेवा आयोग के अध्यक्ष तथा सदस्यों की नियुक्ति करता हैं।
   (c) **विभागों का वितरण –** राज्यपाल मुख्यमंत्री के परामर्श से विभिन्न मंत्रियों के बीच विभागों का वितरण करता है।
   (d) **आपातकालीन स्थिति संबंधी अधिकार –** यदि राज्यपाल यह अनुभव करता है कि राज्य का शासन संविधान के अनुसार नहीं चल पा रहा है तो वह राष्ट्रपति को इसकी सूचना देता है। उसकी सूचना पर राष्ट्रपति उस राज्य में आपातकालीन घोषणा अथवा राष्ट्रपति शासन लागू कर देता है। इसके प्रभावस्वरूप राज्यपाल राष्ट्रपति के आदेशानुसार शासन का सम्पूर्ण कार्य अपने हाथ में ले लेता है।
2. **कानून निर्माण संबंधी अधिकार –** राज्यपाल राज्य के विधानमंण्डल का प्रमुख अंग होता है। इस रूप में वह निम्न कार्य करता है–
   (a) उसे विधानमण्डल के दोनों सदनों के अधिवेशन बुलाने, स्थगित करने तथा विधानसभा को भंग करने का अधिकार हैं
   (b) वह विधानमण्डल के किसी सदन में उपस्थित होकर भाषण दे सकता है तथा अपना लिखित संदेश भेज सकता है।
   (c) वह विधानपरिषद के लगभग 1/6 सदस्यों को मनोनीत करता है।
   (d) राज्य में राज्यपाल के हस्ताक्षर के बिना कोई भी विधेयक कानून का रूप धारण नहीं कर सकता है। राज्यपाल किसी भी विधेयक को पुनर्विचार हेतु विधानसभा को वापस भेज सकता है लेकिन पुनर्विचार होकर आने पर हस्ताक्षर करने के लिए बाध्य होता है।
   (e) जिस समय विधानसभा का अधिवेशन न चल रहा हो उस समय वह राज्य में अध्यादेश जारी कर सकता है। यह अध्यादेश विधानसभा की बैठक प्रारम्भ होने के 6 सप्ताह बाद तक लागू रहता है।
3. **वित्त संबंधी अधिकार–**
   (a) **बजट प्रस्तुत करवाना –** राज्यपाल प्रत्येक वित्तीय वर्ष प्रारम्भ होने से पूर्व वित्तमंत्री के द्वारा विधानमण्डल में बजट प्रस्तुत करवाता है।
   (b) **धन विधेयक –** राज्यपाल की सिफारिश के बिना कोई भी धन विधेयक विधानसभा में पेश नहीं किया जा सकता है।

सभी विद्यार्थियों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर/डेस्क वर्क प्राप्त करने के लिए 9460377092 को अपनी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में एड करें। आपकी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में पेपर भेज दिए जाएंगे।
www.rajteachers.com

(c) राज्य की संचित निधि पर राज्यपाल का नियंत्रण रहता है। अतः किसी भी आकस्मिक खर्च के लिए वह सरकार को इस निधि में से खर्च करने हेतु धन दे सकता है।

4. **न्याय संबंधी अधिकार** – जिन विषयों पर राज्य की कार्यपालिका शक्ति का विस्तार होता है उन विषयों संबंधी किसी विधि के विरुद्ध अपराध करने वाले व्यक्तियों के दण्ड को राज्यपाल कम कर सकता है, स्थगित कर सकता है, बदल सकता है या उन्हें क्षमा प्रदान कर सकता है।

अथवा

29. मुख्यमंत्री द्वारा किए जाने वाले कार्यों की विवेचना कीजिए। 7

उत्तर :

भारत के संविधान में राज्य के मुख्यमंत्री को वही स्थान दिया गया है, जो केन्द्र में प्रधानमंत्री को दिया गया है। वास्तव में मुख्यमंत्री राज्य के शासन संचालन का सर्वेसर्वा होता है। मुख्यमंत्री राज्य का वास्तविक शासक होता है। भारत के संविधान में मुख्यमंत्री के कार्यों का सीमित उल्लेख ही मिलता है।

मुख्यमंत्री के द्वारा किये जाने वाले कार्य निम्नलिखित हैं–

1. राज्य में शान्ति व्यवस्था और विकास के लिये योजनाएँ एवं कार्यक्रम तैयार करना।
2. राज्य विधानसभा का सत्र बुलवाना।
3. राज्य सूची से सम्बन्धित विषयों पर विधि एवं कानून बनाना।
4. राज्यपाल का भाषण तैयार करवाना।
5. राज्यपाल और मंत्रिपरिषद् के बीच सम्पर्क सूत्र का काम करना।
6. राज्य के शासन संचालन के लिए आवश्यक कार्यविधि तैयार करना।
7. विदेश, केन्द्र तथा अन्य राज्य सरकारों से सम्पर्क एवं समन्वय स्थापित करना।
8. राज्य के कुशल प्रशासन की व्यवस्था करना।
9. राज्य के विकास के लिए नीति एवं योजनाएँ बनाना।
10. राज्य के विकास के लिए समस्त प्रकार के संसाधनों का समुचित उपयोग सुनिश्चित करना।
11. राज्य के हितों और पक्षों को विभिन्न मंचों पर स्पष्ट करना।
12. केन्द्र तथा विभिन्न अभिकरणों से संधियाँ एवं समझौते करना।
13. राज्य की प्रशासनिक संस्थाओं तथा विभागों के बीच समन्वय स्थापित करना।
14. राज्य के चहुँमुखी विकास के लिए मंत्रिपरिषद् की बैठकों के माध्यम से नीतियाँ तैयार करना।
15. राज्य का बजट निर्माण करना, बजट की स्वीकृति और उसकी क्रियान्विति सुनिश्चित करना।
16. अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति तथा पिछड़े वर्गों के विकास एवं कल्याण के कार्यों को करना।
17. राज्य की जनता से सम्पर्क स्थापित करना।
18. जनता की शिकायतों को सुनना और उनकी समस्याओं का निराकरण करना।
19. राज्यपाल को राज्य के शासन एवं प्रशासन के सम्बन्ध में सूचनाएँ प्रेषित कर अवगत कराना।
20. राज्य के सरकारी कर्मचारियों के लिए कार्मिक नीतियाँ तैयार करना।
21. राज्य प्रशासन से सम्पर्क स्थापित करना और नेतृत्व करना।
22. प्राकृतिक आपदाओं से जनता को बचाने की विशेष व्यवस्थाएँ करना।
23. राजस्व संग्रहण करना और राज्य की वित्तीय स्थिति सुदृढ़ करना।
24. राज्य में महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों के आगमन पर उनका स्वागत करना एवं उनकी अगुवाई करना।
25. राज्य विधानमण्डल में विपक्षी सदस्यों द्वारा पूछे गये प्रश्नों का जवाब देना और सरकार तथा मंत्रिपरिषद् का पक्ष स्पष्ट करना।

30. 1. दिए गए भारत के रेखा मानचित्र में निम्न को अंकित कीजिए– 5

(a) सूरत

(b) गोवा

2. दिए गए भारत के रेखा मानचित्र में निम्न अंकित कीजिए–

(a) चावल उत्पादक प्रमुख क्षेत्र

(b) मुम्बई हाई

(c) भद्रावती लौहा और इस्पात संयंत्र

उत्तर :

□□□□□□□

सभी गुरूजनों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर प्राप्त करने के लिए 9460377092 पर सिर्फ TEACHER शब्द व्हाट्सएप्प करें। आपसे संपर्क कर आपको विशेष रूप से मॉडल पेपर भेजे जाएंगे।
www.rajteachers.com